'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Vol.-VIII, Issue-II
Peer Reviewed Journal

E-ISSN : 2348-7143
April-June 2021

'गिलीगडू' उपन्यास में चित्रित वृद्ध जीवन की त्रासदी

डॉ.विष्णु गोविंदराव राठोड
सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मनमाड (नासिक)
मो.न. 942062975
Email Id - vgrathod80@gimal.com

भारतीय संस्कृति में संबंधों का बड़ा महत्व रहा है । यह संस्कृति धर्म एवं अध्यात्म पर होने के साथ-साथ हमें संस्कारित भी करती है । परिवार इसी संस्कृति और संस्कारों का निर्वाह करते हैं । भारतीय संस्कृति सामूहिकता की संस्कृति रही है । त्याग, प्रेम, सदाचार आदि इसके विधायक तत्व रहे हैं, जिन्हें भारतीय मनुष्य अपने जीवन में पूरी तरह तन्मयता के साथ निभाता रहा है । परिवार में बच्चे आनंद, स्त्रियां प्रेम और वृद्ध शांति की अनुभूति कराते हैं । निरंतर आधुनिक होते जा रहे समाज में उपर्युक्त मूल्य हो गए और सुख सुविधाएं अर्थ, भौतिकता आदि प्रमुख हो गए हैं , ऐसे में संबंधों के लिए जगह नहीं बची है । हमने संबंधों का निर्वहन तब तक किया जब तक संबंध हमारे लिए लाभदायक है, अनुपयोगी होने के बाद हमने उन्हें ढोना जरूरी नहीं समझा ।

'गिलीगडू'उपन्यास चित्रा मुद्गल द्वारा लिखा गया है । इस उपन्यास में उन्होंने वृद्धों की समस्याओं को बहुत ही मार्मिकता के साथ चित्रित किया है । लेखिका ने अपने उपन्यास में तेरह दिनों के उद्धव के जीवन को केंद्र में रखा है जिसे उन्होंने गैरमौजूदगी का नाम दिया है । यह उपन्यास हमारे तथाकथित सभ्य जीवन की पोल खोलता है, जो बुजुर्गों की समस्या की जड़ में है । सुखी परिवार उसे कहा जाता था जहां परिवार के बुजुर्गों को आदर, सम्मान एवं सुख देने के साथ-साथ उन्हें खुश रखना भी उनके संतानों का परम कर्तव्य माना जाता था लेकिन वर्तमान समय में इसका अभाव सर्वत्र अनुभव किया जा रहा है । डॉ. अर्चना मिश्रा का कथन है," गीलीगडू उपन्यास में चित्रा मुद्गल जी ने वृद्धों के विचारों की संवेदनशीलता और जीवन शैली को विस्तार दिया है । पुस्तक के फेस पर लिखी इबारत भी इस उपन्यास के आधार भूमि की ओर संकेत करती है । अलीगढ़ चित्रा मुद्गल जी का आकार में छोटा परंतु संवेदनशीलता में कहीं गहरा उपन्यास है । इस उपन्यास में सेवानिवृत्त बुजुर्ग की एक कहानी नहीं जीवन के रंग बहुआयामी रूपों में उभर कर सामने आए हैं ।"1

प्रस्तुत उपन्यास में जो वृद्ध दिखाई देते हैं उसे ही या उनकी समस्याओं को ही चित्रा मुद्गल जी ने पाठक के सामने नहीं रखा बल्कि उपन्यास के दो नायक बाबू जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी के बहाने चित्रा मुद्गल जी ने देश के वृद्धों के प्रश्नों को उठाया है । उन कारणों की तलाश की है जो उनकी दयनीय दशा के कारण है । भूमंडलीकरण, पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण, टूटते परिवार, भौतिकता के प्रति बढ़ता प्रभाव और त्याग एवं प्रेम का अभाव जिससे कुछ कारण है जो मनुष्य को मनुष्यता की सीमा से बाहर कर देते हैं । इस प्रक्रिया में कमजोर लोग पीसते हैं, जिसमें बाल, वृद्ध ,स्त्री और दलित को प्रमुख माना है । अन्य वर्ग तो शारीरिक रूप से स्वस्थ होने के कारण विरोध भी करते हैं किंतु वृद्ध शारीरिक रूप से अक्षम होने के कारण विरोध में बोल भी नहीं पाते और उसी परिस्थिति में जीने के लिए विवश हो जाते हैं। आज के परिवेश में यदि हम वृद्धों की समस्या को देखें तो ज्ञात होता है कि उनकी समस्याओं के लिए जिम्मेदार उनके अपने परिवार वाले ही होते हैं । परिवार द्वारा मिलने वाला दुख, उनके द्वारा की जाने वाली उपेक्षा, एकांकीपन और उनकी अपनी शारीरिक दुर्बलता के चलते वृद्ध धीरे-धीरे हंसी पर चला जाता है । आधुनिक युग की जीवन शैली ने आज के मनुष्य को स्वार्थ केंद्रित बनाया है । जहां उसे अब किसी की जरूरत नहीं रही । भूमंडलीकरण ने मूल्यों की दीवार में छेद लगाई है । फलत: मूल्य खंडित हुए हैं । आज संबंधों का निर्वाह करने के लिए युवा पीढ़ी तैयार नहीं है । उनकी आधुनिक जीवन शैली में अथवा फैशन परस्ती में जिस ओर से बाधा उत्पन्न होती है उसे वे बड़ी बेदर्दी के साथ निकाल बाहर करते हैं चाहे वह उसका पिता ही क्यों ना हो । यह कहानी